बाडोली के मंदिर

TEMPLES OF BADOLI

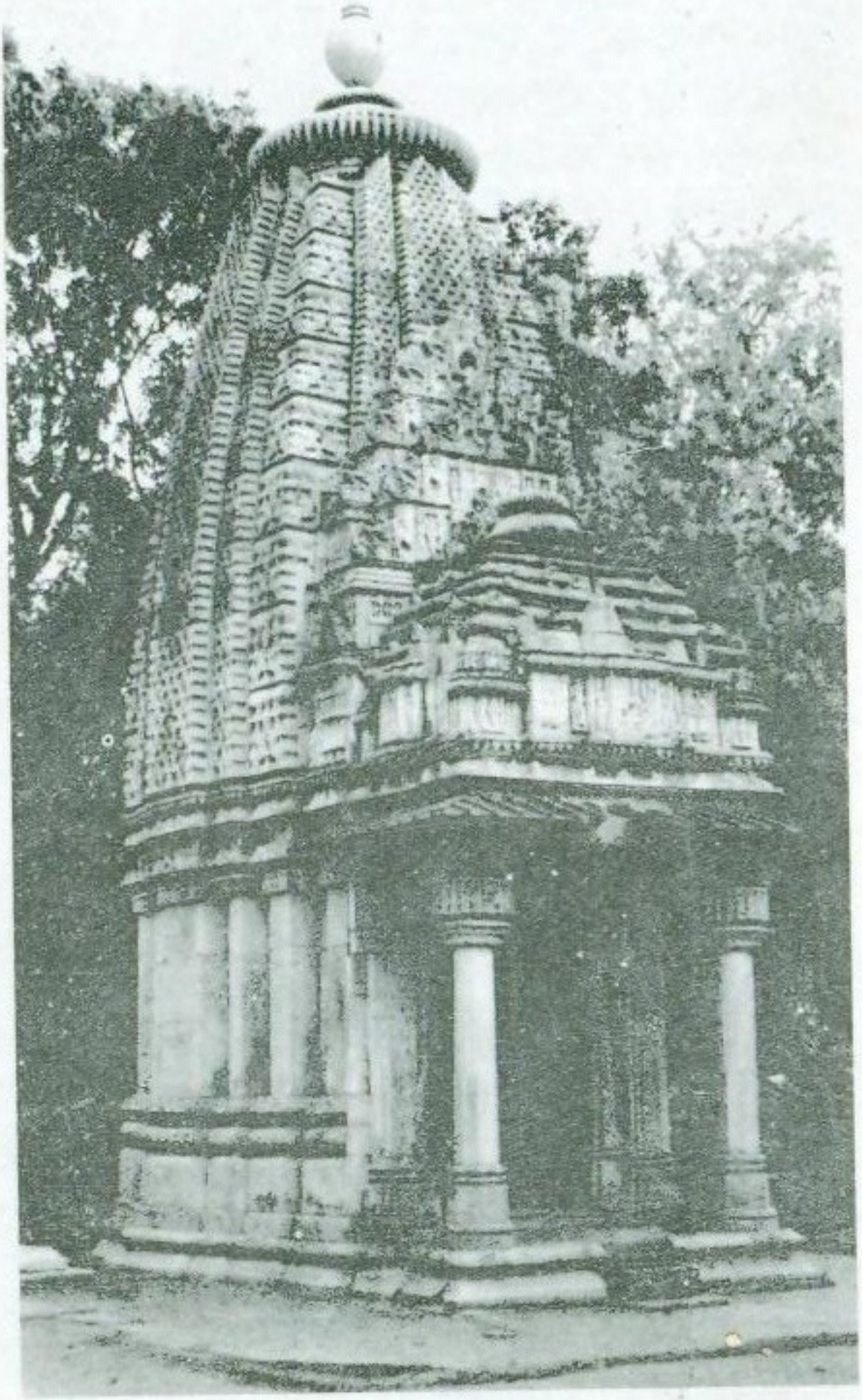

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

भारतीय पुरातत्तव सर्वेक्षण

Archaeological Survey of India

जयपुर मण्डल, जयपुर

Jaipur Circle, Jaipur

2003

बाडोली के मंदिर

बाडोली मंदिर समूह प्राचीन चम्बलनदी नदी के पूर्वी तट पर कोटा से ४८ किमी. दक्षिण-पश्चिम तथा रावतभाटा से २ किमी. उत्तर में चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है। यह रमणीक स्थल विस्तृत पठारी क्षेत्र पर फैला है जिसकी ऊपरी सतह उपजाऊ मिट्टी से ढकी है एवं जो अरावली पर्वतमाला से घिरा हुआ है जिसका विस्तार चित्तौड़गढ़, कोटा एवं बूंदी तक फैला है। इनके निर्माण हेतु स्थल के चयन का मुख्य कारण यहाँ से चार किमी दूर चंबल एवं बामनी नदी के संगम पर स्थित भैंसरोड़गढ़ का होना था जो कि प्राचीन काल से सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था। यह स्थल मालवा, हाड़ौती एवं मेवाड़ को जोड़ने वाले प्राचीन व्यापारिक मार्ग पर स्थित था। बाडोली मंदिरों के निर्माण में मुख्य भूमिका यहाँ निरन्तर बहने वाले झरने की भी रही है। ये मंदिर राजस्थान के उन प्राचीन एवं भव्य मंदिरों में से हैं जिनका निर्माण दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी में हुआ तथा जो विकसित मंदिर, स्थापत्य एवं कला का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहाँ पर निर्मित नौ मंदिरों में एक-एक गणेश, महिषमर्दिनी, वामन, दो विष्णु तथा अन्य चार शिव को समर्पित हैं। इनमें सबसे विशाल एवं भव्य मंदिर घटेश्वर महादेव को समर्पित है।

घटेश्वर महादेव मंदिर : शिव को समर्पित यह पूर्वाभिमुख मंदिर योजना में विकसित गर्भगृह, अन्तराल एवं मुखमण्डप से युक्त है। नीची पीठ पर निर्मित यह मंदिर वेदिबन्ध एवं अलंकरण विहीन जंघा के ऊपर लतिन शिखर से मंडित है। शिखर के पिछले भाग पर ग्रीवा के निकट नटराज का अंकन विशेष उल्लेखनीय है। जंघा की भद्र ताकों में चामुण्डा, गणेश एवं शिव के अंकनात्मक रूप को क्रमश: उत्तर, पश्चिम, एवं दक्षिण दिशा में दिखाया गया है। गर्भगृह में स्थापित शिवलिंग घटेश्वर महादेव के रूप में पूज्य है।

मंदिर समूह का सामान्य दृश्य
General view of the temples

गर्भगृह की द्वारशाखा के निचले भाग में गंगा एवं यमुना को उनके परिचारी सहित दर्शाया गया है। प्रवेशद्वार के उत्तरंग के मध्य में गणेश, बांए ब्रह्मा एवं दांए भाग में विष्णु विराजमान हैं। प्रवेशद्वार पर मकर तोरण का अंकन है। मुखमण्डप दो स्तम्भों एवं दो अर्द्धस्तम्भों पर आधारित है जिनके स्तम्भों के अष्टकोणीय भाग के ऊपर सुन्दर अप्सराओं की मूर्तियाँ बनी हैं तथा स्तम्भों के ऊपरी भाग में बनी रथिकाओं में धार्मिक एवं लौकिक दृश्य उत्कीर्ण हैं। अन्तराल के ऊपर भव्य रथिका में अलंकृत तीन तल वाली शुकनासा निर्मित है। इस मंदिर का निर्माण दसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में हुआ था। मुखमण्डप के सामने बाद में निर्मित एक भव्य रंगमण्डप है। यह वर्गाकार रंगमण्डप नीची अलंकृत पीठ पर खड़ा पार्श्वआलिन्द युक्त है। जिसकी छत चार वर्गाकार एवं बीस बाह्य स्तम्भों पर आधारित है।

महिषमर्दिनी मंदिर: यह पूर्वाभिमुख मंदिर घटेश्वर महादेव के दक्षिण में स्थित है। नीची पीठ पर खड़ा मंदिर गर्भगृह, अन्तराल एवं स्तम्भों पर आधारित मुखमण्डप से युक्त है। पंचरथ गर्भगृह शकोटीय शिखर से मंडित है। मंदिर का बाह्य भाग तथा प्रवेशद्वार सादा है। गर्भगृह के मध्य में महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमा विराजमान है। उत्तरंग के मध्य ब्रह्माणी तथा दोनों पार्श्व में ब्रह्माणी एवं वैष्णवी को बैठे दिखाया गया है। अन्तराल की सपाट छत के ऊपर शुकनासा बनी है। मुखमण्डप के ऊपर दो स्तम्भों पर आधारित सम्वरणा प्रकार की छत है तथा स्तम्भों के ऊपर ताक में विष्णु, अप्सराओं एवं देवी-देवताओं का अंकन है। शैलीगत विशेषता के आधार पर यह मंदिर दसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में रखा जा सकता है।

वामन मंदिर: विष्णु को समर्पित यह लघु मंदिर विकसित गर्भगृह एवं अन्तराल युक्त है। पूर्वाभिमुख मंदिर नीची पीठ पर निर्मित है जिसके गर्भगृह के प्रवेशद्वार के उत्तरंग के मध्य ललाटबिम्ब पर गणेश विराजमान है। गर्भगृह के अन्दर विष्णु के वामन अवतार की प्रतिमा स्थापित है। इस मंदिर का निर्माण दसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ था।

त्रिमूर्ति या महेशमूर्ति मंदिर : वामन मंदिर के दक्षिण में स्थित यह पूर्वाभिमुख मंदिर महेश को समर्पित है। मंदिर के गर्भगृह और अन्तराल सुरक्षित है तथा मुखमण्डप पूर्ण रूप से नष्ट हो चुका है। नीची पीठ पर निर्मित यह मंदिर पंचरथ गर्भगृह, वेदिबन्ध, जंघा एवं शकोटीय शिखर से मंडित है। गर्भगृह के द्वारशाखाओं के निचले भाग में गंगा एवं यमुना का अंकन मिलता है। प्रवेशद्वार के उत्तरंग पर शिव की प्रतिमा एवं उसके दोनों पार्श्व में अप्सराओं का अंकन है। गर्भगृह के अन्दर शिव की त्रिमूर्ति प्रतिमा स्थापित है। मंदिर का अन्तराल सादा एवं शुकनासा युक्त है जिस पर चैत्य गवाक्ष अलंकरण बने हैं। मुखमण्डप के मध्य में नंदी स्थापित है। इसका निर्माण दसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ था।

गणेश मंदिर : घटेश्वर महादेव के उत्तर में स्थित इस खण्डित मंदिर में गर्भगृह एवं अन्तराल ही शेष है। मंदिर उर्ध्वाधर योजना में नीची पीठ पर खड़ा, वेदिबंध, सादी जंघा एवं वरण्डिका से युक्त है। मंदिर की वरण्डिका अर्द्ध-पद्म एवं पत्र-अलंकरण से सुसज्जित है। ईंटों से निर्मित मंदिर का शिखर खण्डित अवस्था में है। गर्भगृह के द्वारशाखा के दोनों पार्श्वों में गंगा एवं यमुना का अंकन है। गर्भगृह के अन्दर पूज्य गणेश की विशाल प्रतिमा विराजमान है। इस मंदिर का निर्माण दसवीं सदी के मध्य हुआ था।

शेषशायी विष्णु मंदिर : विष्णु को समर्पित उत्तराभिमुख यह मंदिर गर्भगृह एवं अन्तराल युक्त है। गर्भगृह योजना में त्रिरथ, वेदिबन्ध, सादी जंघा एवं

घटेश्वर महादेव मंदिर
Ghateswara Mahadeva temple

वरण्डिका युक्त है जिसका शिखर खण्डित है। मंदिर का बाह्य एवं आंतरिक भाग सादा है। गर्भगृह की द्वारशाखा अलंकरण विहीन है तथा इसमें स्थापित शेषशायी विष्णु प्रतिमा वर्तमान में राजकीय संग्रहालय, कोटा में प्रदर्शित है। इस मंदिर का निर्माण दसवीं शताब्दी के मध्य में हुआ था।

शिव मंदिर एवं कुण्ड : पूर्वाभिमुख यह लघु मंदिर सीढ़ी युक्त कुण्ड के मध्य निर्मित है। मंदिर का गर्भगृह वर्गाकार प्रकार का है जिसके पूर्वी-द्वार पर मुखमण्डप बना है। मंदिर के शेष तीन प्रवेशद्वार खुले हैं जबकि पश्चिमी द्वार में पत्थर की जाली लगी है। मंदिर नीची पीठ पर खड़ा, वेदिबंध एवं सादी जंघा युक्त है जिसके ऊपर नागर शैली का शिखर है। गर्भगृह के मध्य में शिवलिंग स्थापित है। मुखमण्डप की सपाट छत दो स्तम्भों पर आधारित है। इसका निर्माण दसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ था।

घटेश्वर मंदिर के प्रांगण में अलंकृत द्वारशाखा और दो भव्य तोरण द्वार स्वतन्त्र रूप से दर्शनीय हैं जो एक अन्य मंदिर होने का प्रमाण देते हैं। इसके अतिरिक्त चबूतरे पर रखी आदमकद हनुमान की मूर्ति तथा इसके पार्श्व में स्थित कुण्ड महत्वपूर्ण हैं। बड़े पत्थरों से निर्मित कुण्ड में उतरने के लिए तीनों ओर सीढ़ियां बनी हैं।

मठ मंदिर: महिषासुरमर्दिनी को समर्पित यह पश्चिमाभिमुख मंदिर मुख्य मंदिर समूह से लगभग एक किमी. दूर स्थित है। योजना में यह मंदिर वर्गाकार गर्भगृह, अन्तराल एवं मुखमण्डप से युक्त है। गर्भगृह तीन पट्ट युक्त पीठ के ऊपर निर्मित है जिसके बड़े पत्थरों के ऊपर वेदिबन्ध तथा अलंकरण विहीन जंघा है। गर्भगृह में महिषासुरमर्दिनी की खण्डित प्रतिमा स्थित है। मंदिर का प्रवेशद्वार पंचशाखा युक्त है जिसके उत्तरंग के मध्य ब्रह्माणी तथा दोनों किनारों पर ब्रह्माणी एवं वैष्णवी अलंकृत हैं। यह मंदिर दसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध अथवा ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में निर्मित हुआ था।

TEMPLES OF BADOLI

The temples of Badoli are located on the eastern bank of river Chambal or ancient Chamanvati, about 48 km southwest of Kota and 2 km north of Rawatbhata in district Chittaurgarh. The site so selected is on extensive *pathar* covered with fertile soil, surrounded by branch of Aravalli hills which run through Chittaurgarh, Kota and Bundi districts is very close to Bhaisorgarh on the confluence of river Chambal and Bamni; a place of great antiquity and strategic significance. The site is also on the trade route connecting Malwa, Hardoti and Mewar. A fountain which continuously flow througout the year is precisely delimited the site for construction of these temples.

These temples are one of the oldest and spectacular temple complex in Rajasthan dating back to tenth-eleventh century AD. The art and architecture of these temples consider them to be the most perfect of their age. In the group there are nine temples, two are dedicated to Vishnu and one each to Ganesa, Mahisasuramardini and Mataji and remaining four to Siva. The larger one is dedicated to Ghateswara Mahadeva.

Ghatesvara Mahadeva Temple: Facing east, this temple, on plan consists on a *trianga garbhagriha, antarala* and *mukhamandapa.* It is raised over the *pitha,* comprises of *vedibandha* and a plain *jangha* surmounted by curvilinear *shikhara.* A *dwaja-purusha* near the summit of *sikhara* deserves to be noticed. The images of Chamunda, Natesa and Andhakantaka, a form of Siva are enshrined in the *bhadra*-niches of the *jangha* on the north, west and south respectively. The sanctum enshrines circular-stone boulder worshiped as Ghatesvara Mahadeva. The river goddess Ganga and Yamuna with their attendants are shown on the lower part of door-jambs of *garbhagriha.* While lintel have images of Natesa in the center, Brahma on the right and Vishnu on the left. The ceiling of the vestibule elaborately decorated. The *mukhamandapa* is entered through a beautiful *makara-torana* resting on six pillars and two pilasters. The composite pillars are decorated with the figures of *apsaras* on alternate facets of the octagonal shafts followed by chain and bell decoration. The roof has *rathikas* depicting religious and secular themes. The *antarala* is topped by a *sukanasa*, decorated with *chaitya* window motif. The temple is assignable to early tenth century AD. The *rangamandapa* stands separately on the

front of *makhamandapa* over the low ornate *pitha* is a late additions and is square on plan with two side projections. The roof is resting on twenty-four pillars, four square in the centre and twenty in its periphery.

Mahisasuramardini Temple: This temple is located on the south of Ghatesvara temple. Facing east standing on low *pitha*, it consists of a *garbhagriha*, a vestibule and a pillared portico. The *pancharatha* sanctum has plain *jangha* crowned by a curvilinear *sikharas*. The sanctum enshrined the image of Mahisasuramardini. The image of Mahesvari, flanked on either side by Brahmani and Vaisnavi, is depicted in the centre of the *lalata*. The vestibule has plain ceiling crowned by a *sukanasa*. The porch has a pair of pillars supporting the elaborated roof. The capital of pillars have niches having the images of amorous *mithunas*, *apsaras* and divine figurines. Stylistically, the temple is assignable to first quarter of the tenth century A.D.

Vamana Temple: Facing east, this small temple consists of a *triange* sanctum and vestibule. The sanctum rises from a *pitha* with usual *vedibandha* and plain *jangha*. The *shikhara of the garbhagriha* is missing. The door-jambs are plain but the figure of the Ganesa is shown in the centre of lintel. An image of Vamana, is installed in the sanctum. The temple is assignable to first quarter of the tenth century A.D.

त्रिमूर्ति मंदिर

Trimurti temple

Trimurti or Mahesamurti Temple: Facing east, this temple is located on the south of Vamana temple. It consists of a sanctum, a vestibule and a ruined portico. The *pancharatha* sanctum is raised over a low *pitha* followed by *vedibandha* and plain *jangha* crowned by a curvilinear *sikhara*. The sanctum entered through a plain

रंगमंडप घटेश्वर महादेव

Rangamandapa, Gatesvara Mahadeva

doorway, but river Ganga and Yamuna are depicted on the lower part of door-jambs. A dancing figure of Siva is shown in the centre of the lintel flanked by *apsaras*. The sanctum enshrines the image of Trimurti. The vestibule has a *sukanasa* adorned with *chaitya-gavaksha*. Seated Nandi is fixed in the *mukhachatuski*, the roof of which is now missing. The temple is datable to early tenth century A.D.

Ganesa Temple: This temple is on the north of Ghatesvara Mahadeva temple and stands on low *pitha* with *vedibandha* and plain *jangha* topped by *varandika* mouldings adorned with loop of garlands and leaf foliage motifs. The *sikhara* of the temple is of bricks. Doorway of *garbhagriha*, flanked by river goddesses on either side. A colossal image of dancing Ganesa is enshrined in the sanctum.

Shesasayi Vishnu Temple: Facing north, it consists of a sanctum and a vestibule. The *garbhagriha* is *triratha* on plan and has bold *vedibandha* mouldings, plain *jangha* and *varandika* crowned by *sikhara* which is now missing. The doorway of the sanctum has plain *sakhas*. The *antarala* shows laterally placed niche on its back *bhadra*. The enshrined image of Shesasayi Vishnu in the *garbhagriha* has now been shifted to Kota Museum. This temple is assigned to the mid-tenth century A.D on stylistic ground.

Siva Temple and Kunda: Stands in the centre of stepped *kunda* and facing east, this miniature temple consists of a *sarbatobhadra* sanctum and a pillared portico. It stands on low *pitha* mouldings followed by *vedibandha* and plain *jangha*. The sanctum enshrined a small Siva-*linga* in the centre. The roof of the portico is resting on a pair of pillars. It is assignable to third quarter of tenth century A.D.

A meticulously carved *dwarasakha* of a temple and a pair of *torana* lying in the compound of Ghatesvara temple indicates the existence of a another temple. Besides, a colossal image of Hanumana kept on the platform and a *kunda* on the north of Ghatesvara Mahadeva temple are worth mentioning. The *kunda* is built of dressed stone blocks with steps from three sides.

Mata Temple: Dedicated to Mahisasuramardini, it is located out side the main group of temples. It consists of square sanctum, a *kapili* and a *mukhamandapa*. The temple stands on three plain *bhitta* surmounted by *pitha*, *vedibandha* and plain *jangha*. The sanctum enshrined a mutilated image of goddess Mahisamardini. The doorway of the sanctum has five plain *sakhas* with Mahesvari in the centre of *lalata* and Brahmani and Vaisanavi on the terminals. The temple is assignable to late tenth or the beginning of eleventh century A.D.

अन्धकान्तक शिव, घटेश्वर मंदिर

Andhakantaka Siva, Ghatesvara temple

आलेख : डॉ डी एन डिमरी एवं राजेन्द्र यादव

Text compiled by: Dr. D.N. Dimri and Rajendra Yadav

© भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, जयपुर मण्डल, जयपुर, 2003

© Archaeological Survey of India Jaipur Circle, Jaipur, 2003